डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

बीए प्रतिष्ठा हिंदी प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

विद्यापति के काव्य में वियोग वर्णन

विद्यापति का वियोग वर्णन अत्यंत सघन है, उसमें वेदना की विवृति है। विद्यापति के वियोग वर्णन को लेकर विद्वानों में मतभेद है, कुछ विद्वान उनके संयोग वर्णन को अधिक महत्व देते हुए संयोग श्रृंगार का कवि मानते हैं जबकि कुछ विद्वान उन्हें समान रूप से संयोग और वियोग श्रृंगार का कवि मानते हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में "विद्यापति ने अंतर्जगत का उतना हृदयग्राही वर्णन नहीं किया, जितना बहिर्जगत का।" परंतु दूसरी ओर अनेक ऐसे विद्वान हैं जो विद्यापति को मानव – स्वभाव और नर – नारी की सूक्ष्म मनोदशाओं को समझनेवाले कवि मानते हैं और उन्हें वियोग श्रृंगार की मार्मिक अभिव्यक्ति का श्रेय देते हैं। डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित ने कहा है – "विद्यापति ने विरह का ऐसा मर्मस्पर्शी चित्रण किया है कि हृदय थाम कर रह जाना पड़ता है। राधा की विरहानुभूति इतनी मार्मिक और हृदयद्रावक है कि पाठक भी भूल जाता है कि वह काव्यानंद में मग्न है या प्रेमानंद में।" डॉ. जयनाथ नलिन ने विद्यापति के संयोग और वियोग श्रृंगार दोनों ही पक्षों के चित्रण का समग्र मूल्यांकन किया है। उनकी उक्ति यहाँ उद्धृत करना समीचीन है –

"श्रृंगार के अंतर्गत आनेवाले सभी उद्दीपन विभावों और संचारी भावों का चित्रण विद्यापति में मिल जाएगा। शरद – चंद्रमा, मलय – समीर, वासन्ती – ज्योत्सना, भ्रमर, चातक, मोर, कोकिल, दादुर, पावस, मेघ, कमल, जमुना – तट, कुंज – कुटीर, फुलवारी आदि वियोग और संयोग दोनों पक्षों के उद्दीपन विद्यापति के श्रृंगार में रसवर्द्धक होकर आए हैं। अनुभावों की तो गिनती ही नहीं हो सकती। विद्यापति में उनकी जो परिपूर्णता है, हिंदी कवियों में कम ही देखने को मिलेगी। विद्यापति में निर्वेद, ग्लानि, शंका, भय, आलस्य, विषाद, चिंता, मोह, स्वप्न, विबोध, स्मृति, उत्सुकता, दीनता, हर्ष, ब्रीड़ा, व्याधि, मरण, अपस्मार, आवेग, त्रास, उन्माद, जड़ता आदि संचारियों के अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं।"

विद्यापति ने पूर्वराग और करुण विप्रलम्भ दोनों का ही सजीव चित्रण किया है। पूर्वराग विरह की ऐसी अवस्था है जिसमें मिलन के पूर्व प्रत्यक्ष – दर्शन, चित्र दर्शन, स्वप्न - दर्शन एवं गुण श्रवण के कारण प्रेमोद्भव होता है एवं तदुपरांत मिलन के लिए व्याकुलता होती है। विद्यापति ने पूर्वराग का चित्रण अत्यंत कलात्मक रूप में किया है। 'विद्यापति पदावली' में प्रत्यक्ष दर्शन तथा सखियों द्वारा रूप – गुण प्रशंसा सुनकर ही नायक – नायिका क हृदय में प्रेम अंकुरित होता है। नायिका के रूप – सौंदर्य की प्रशंसा नायक के मन में पहले रूपलिप्सा उत्पन्न करता है तत्पश्चात हृदय में प्रेम अंकुरित होने लगता है। नायिका से मिलने के लिए वह व्याकुल हो जाता है। नायिका की

सखि द्वारा नायिका के रूप की प्रशंसा करने पर नायक के हृदय में प्रेम उत्पन्न हो जाता है और वह पूर्वराग की अवस्था में आ जाता है –

“पीन पयोधर दूबरि गाता, मेरु उपजल कनकलता।

ए कान्हु ए कान्हु तोरि दोहाई, अति अपूरुब देखलि साई।।”

कृष्ण के रूप की प्रशंसा सुनकर राधा के मन में भी पूर्वराग उत्पन्न हो जाता है और वह कृष्ण से मिलने के लिए व्याकुल हो उठती है –

“मन करे तहां उड़ि जाइअ जहाँ हरि पाइअ रे।

प्रेम – परसमनि जानि आनि उर लाइअ रे।।”

पूर्वराग में जब मिलन की उत्कट इच्छा होती है, और प्रिय से मिलन नहीं हो पाता है, तब विरह में नायिका की दशा दयनीय हो जाती है –

“लोटइ धरनि, धरनि धरि सोइ, खनखन सांस खनेखन रोइ।

खनेखन मुरछइ कंठ परान, इथि पर की गति दैव से जान।।”

पूर्वराग में विरह के जो चित्र हैं वे तो मार्मिक बन ही पड़े हैं, परंतु करुण विप्रलम्भ का चित्रण हृदय – विदारक प्रतीत होता है। करुण विप्रलम्भ के चित्रण में विरह जनित कायिक, वाचिक, सात्विक अनुभाव प्रकट हुए हैं। विद्यापति ने पूर्ण वियोग की विभिन्न दशाओं का भी चित्रण किया है। यद्यपि विद्यापति ने वियोग वर्णन में सर्वत्र काव्यशास्त्रीय परंपरा का ध्यान नहीं रखा है तथापि सहज रूप में ही विभावनुभावव्यभिचारी का सम्यक निरूपण हुआ है –

“माधव कत परबोधब राधा।

हा हरि हा हरि कहतहि बेरि बेरि, अब जिउ करब समाधा।।”

अधिकतर स्थलों पर विद्यापति ने विरह वर्णन को अनलंकृत और सहज रखा है, जिससे यह वर्णन और भी अधिक हृदयस्पर्शी और प्रभावी हो गया है –

“लोचन धाए फेधायल, हरि नहि आयल रे।

सिब सिब जिबओ न जाए आस अरुझायल रे।।”

प्रियतम के लौटने का दिन गिनते – गिनते विरहिणी नायिका की अंगुलियों के नाखून घिस गए हैं, पथ निहारते – निहारते आँखें अंधी हो गई हैं –

“सखि मोर पिया।

अबहू न आओल कुलिस हिया।।

नखर खआओलुं दिवस लिखि लिखि।

नयन अधासोलुं पियापथ देखि।।”

विद्यापति ने नायिका के विरह के साथ – साथ नायक के विरह का भी चित्रण किया है। वियोग श्रृंगार के चित्रण में विद्यापति भावप्रवणता एवं अनुभूति की तीव्रता और गहराई का परिचय देते हैं।